

# लेखन

## ( अ ) अनुच्छेद लेखन

### समस्यात्मक अनुच्छेद

#### 1. भ्रष्टाचार एक समस्या

संकेत बिन्दु—● अर्थ, ● भ्रष्टाचार के क्षेत्र, ● कारण, ● दुष्प्रभाव, ● समाधान।

‘भ्रष्टाचार’ शब्द भ्रष्ट + आचार से बना है जहाँ भ्रष्ट अर्थात् बुरा और आचार अर्थात् आचरण व्यवहार। बुरा या अनैतिक आचरण ही भ्रष्टाचार है जो देश, समाज, सरकारी संस्थाओं आदि जगहों में अपनी जड़ें जमा ली है। रिश्वतखोरी, टैक्स चोरी, झूठी गवाही, परीक्षा में नकल, गलत मूल्यांकन, पक्षपातपूर्ण न्याय प्रणाली, पैसों से वोट की खरीदी, हफ्ता वसूली, चुनाव में धांधली आदि ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ भ्रष्टाचार पुष्पित पल्लवित हो रहा है।

भ्रष्ट राजनेता, भाई भतीजावाद, झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रदर्शन, राष्ट्रभक्ति का अभाव, मानवीय संवेदनाओं की कमी, नैतिक मूल्यों का गिरता स्तर, गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी, लचीली कानून व्यवस्था ऐसे कारण हैं जो व्यक्ति को भ्रष्टाचार करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

भ्रष्टाचार के कारण देश की आर्थिक स्थिति चरमरा गई। विकास अवरूद्ध हो गया। सड़क, बिजली, पानी, सरकारी योजनाएँ ग्रामीण जनता के पहुँच से कोसों दूर रह गई। अयोग्य व्यक्ति उच्च पदों पर आसीन हो गया और बंदर के हाथ तलवार जैसी कहावत को चरितार्थ करने लगा। करोड़ों के घोटाले (कोयला, यूरिया,

भी प्रभावित होती है। प्रत्येक राज्य की अपनी अलग भाषा, मराठी, गुजराती, तमिल, कन्नड़ आदि हैं। उनकी संस्कृति भिन्न है। प्रारब्ध में विदेशी आक्रमणों के कारण यहाँ अनेक धर्म सनातन धर्म के अतिरिक्त इस्लाम, यहूदी, जैन, पारसी, बौद्ध आदि हैं। इन विविधताओं के बावजूद भारत में राष्ट्रीय एकता प्रत्येक राज्य में दृष्टिगोचर है। भारत भूमि को माता की संज्ञा दी गई है अतः कहा गया है “जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी”। भारत के प्रत्येक राज्य जलवायु और उपज/पैदावार की विविधता के कारण उत्पन्न समस्याओं में मदद के लिए परस्पर तैयार रहते हैं। इसलिए कवि इकबाल ने कहा है—

“सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दुस्तां हमारा  
हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलिस्तां हमारा।”

सभी धर्म, भाषा व जाति के लोग एक-दूसरे का सम्मान करते हैं और राष्ट्र की रक्षा, सुरक्षा के लिए एकजुट होकर आगे आते हैं।